नाम : डॉ॰ सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - स्नातक - II पत्र - III

→ मैंने कब कहा शीर्षक कविता का भाव स्पष्ट करें।

उ० 'मैंने कब कहा' शीर्षक कविता प्रयोगवादी कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की अनुभूति परक रचना है। कवि ने विषय-वस्तु को रूप विधान से अधिक महत्व दिया है। कवि का मानना है कि रूप विधान के अनुशासन से विषय की तीव्रता दबती है और उसका प्रभाव कम होता है तो वह अनुशासन भंग करने को तैयार है।

इस कविता में कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने कवि धर्म को विषय-वस्तु बनाया है। कवि विभिन्न मन्तव्यों के द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयत्न करता है कि काव्य रचना का उद्देश्य सत्य को उजागर करना है।

मर्म को सहलाना कविता का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, व्यथा का सम्यक निरूपण भी आवश्यक है। कवि को कभी भी सत्य से मुकरना नहीं चाहिए। चाहे वह कितना ही कष्टकर क्यों न हो। कवि जानता है कि सत्य की चोट अधिक प्रभावक होती है। सत्य की अभिव्यक्ति से यदि हृदय विचलित भी हो जाए तो भी सत्य को उद्घाटित करना चाहिए क्योंकि असत्य से आहत दुर्बल हृदय भी कभी न कभी अपना मस्तक उठाता ही है। कवि ने लिखा है —

" मैंने कब कहा कि मेरा धर्म है
मर्म सहलाकर व्यथा भुला देना।"

कवि का मानना है कि यदि दुर्बलता की स्वीकृति से अन्तर्दृष्टि बढ़े और खण्डित आत्माओं को मुक्ति मिले तो कवि को अपना धर्म निभाते हुए

Scanned with CamScanner

उनकी व्यंजना अवश्य करनी चाहिए, भले वे कितनी कड़वी क्यों न हों।

मैं क्या कवि हूँ—
इसी से जानता हूँ
चश्मे के तले की झुर्रि बड़ी होता है,
इसी से सच्ची चोटें बाँटता हूँ
झूठी मुस्कानें नहीं बेचता।

नई कविता में पहले प्रगतिवादी कवियों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक यथार्थवाद को प्रश्रय दिया था। प्रयोगवाद इसी संवेदना के गहनतम स्तरों को छूता है। नई कविता की विशेषता रही है कि इसमें शैली और छन्द की जगह विषय-वस्तु की प्रधानता मिली है, व्यापक जीवन संघर्षों की प्रधानता मिली है।

"मैंने कब कहा" कविता की भाषा सहज है पर कवि के अनुभूति की अभिव्यक्ति में समर्थ है। शक्तिशाली कविताओं में व्यापक संवेदना और आक्रोश दृष्टिगोचर है जो अन्तर्मन की झकझोरता है। एक सच्चे कवि का क्या कर्तव्य होना चाहिए यही इस कविता का केन्द्र है। कवि का मानना है कि काव्य रचना का उद्देश्य सिर्फ मर्म को सहलाना ही नहीं होना चाहिए इसमें व्यथा, सच्ची अनुभूति तथा जीवन यथार्थ का भी चित्रण होना चाहिए।